एक बहन के उद्गार

प्रेमा रघुनाथ

मैं कई वर्षों तक अपने घर में सबसे छोटी बनी रही, इसलिए जब मेरी बहन का जन्म हुआ और मैं दीदी बनी तो सबसे पहले मेरे मन में उत्साह और गर्व की भावना जगी। मैं यह मानती हूँ कि मैं बहुत सन्तुष्ट भी हुई क्योंकि आख़िरकार मुझे अब इस बात का अवसर मिल गया था कि मैं किसी को आदेश दे सकूँ और कोई उसका पालन करे, जैसे कि मैं आज तक करती आई थी।

लेकिन समय बीतता गया और ऐसा कुछ नहीं हुआ।

पता चला कि मेरी बहन को प्रमस्तिष्क पक्षाघात या सेरेब्रल पॉल्ज़ी (सीपी) थी। इसके कारण परिवार में उत्पन्न हुई घबराहट, उथल-पुथल और चिन्ता की भावना को कम होने में कई महीने लग गए। ज़ाहिर है कि मेरे माता-पिता बहुत चिन्तित थे और उन्हें इस बारे में कुछ पता नहीं था। उस समय इस तरह की स्थितियों के बारे में बहुत अधिक जानकारी नहीं होती थी। परिणामस्वरूप उसे गत्यात्मक, बोलने और विकास सम्बन्धी अनेक विकलांगताएँ हुईं। घर में विकलांग बच्चे के होने का मतलब था एक बहुत ही परिष्कृत प्रकार का सामाजिक बहिष्कार— हर कोई दया दिखाता था और ऐसे व्यवहार करता था मानो हमारी स्थिति समझता हो, लेकिन वास्तव में ऐसा था नहीं। सामाजिक समारोहों के निमन्त्रण बहुत कम हो गए थे क्योंकि हमने तय किया था कि हम गीता (मेरी बहन) को लोगों की नज़रों से दूर या छुपाकर नहीं रखेंगे, वह हमारे परिवार की पूर्ण रूप से सहभागी सदस्या होगी; अतः हमारी उपस्थिति शर्मिन्दगी का कारण बन जाती। मैं उन मुद्दों को सामने रखने की कोशिश कर रही हूँ जो इस स्थिति से उत्पन्न हुए। हालाँकि उस समय की तुलना में अब चीज़ें बहुत बदल गई हैं, लेकिन मानव दृष्टिकोण अभी भी वैसा ही है। मुझे लगता है कि इसे पढ़ने वाले बहुत-से लोग कुछ पहलुओं को प्रासंगिक मानेंगे।

बचपन का खो जाना

पहली बात तो परिवार के अन्य बच्चों को रातोंरात बड़ा होना पड़ता है— कम से कम बाहरी रूप से। घर में विकलांग बच्चे के होने से जो भारी बदलाव अनिवार्य रूप से होते हैं, उनमें कहीं मैंने अपने माता-पिता को खो दिया। घर की सारी गतिविधियाँ कई ज़रूरतों के इर्द-गिर्द घूमने लगती हैं— सामान्य दिनचर्या में विभिन्न उपचारों जैसे फ़िज़ियोथेरेपी, स्पीच थेरेपी और अन्य माँगों को समायोजित करना पड़ता है। यदि माता-पिता इस स्थिति के प्रति जागरूक न हों तो इसके परिणामस्वरूप अन्य भाई-बहनों को अधिक ज़िम्मेदारी लेनी पड़ सकती है— ऐसी ज़िम्मेदारी जिसे वे उस कम उम्र में शायद ही सँभाल सकें। नतीजतन उन्हें उनकी मित्र-मण्डली से बाहर कर दिया जाता है।

दूसरा, विकलांग बच्चे को बचाने के प्रयास में कभी-कभी अन्य भाई-बहनों की कई उपलब्धियों को उतना महत्त्व नहीं दिया जाता। हालाँकि आज बहुत-सी चीज़ें और परिभाषाएँ बदल गई हैं, फिर भी मुझे लगता है कि छोटे और बड़े भाई-बहनों पर भी उतना ही ध्यान देना चाहिए ताकि वे अपनी क्षमतानुसार आगे बढ़ सकें।

तीसरा, इन कमियों को कभी भी पूरा नहीं किया जा सकता। मैंने ख़ुद अपने में वयस्कता के इन प्रभावों को देखा है, जैसे चिन्ता, उत्तरजीवी का अपराधबोध और भ्रमित भावनाएँ।

समानुभूति का बढ़ना

ऐसी परिस्थिति में बड़े होने का एक अच्छा पहलू यह है कि हम और अधिक सहनशील बनते हैं— यह सबक़ भी हम जल्द ही सीख लेते हैं कि जीवन में ऐसी स्थितियाँ अकस्मात ही आ जाती हैं जो हमें आश्चर्यचकित कर देती हैं। ज़िम्मेदारी की भावना जल्द ही आ जाए तो नेतृत्व की स्थिति को स्वीकार करने के साथ-साथ आत्मनिर्भरता की भावना भी विकसित होती है। मेरा ही उदाहरण देखिए, मुझे लगता है कि इसने मुझे आपसी भिन्नता के प्रति अधिक सहिष्णु बना दिया है— मुझे ऐसा लगता ही नहीं था कि किसी के साथ सहज सम्बन्ध बनाने के लिए उन्हें मेरे समान होना चाहिए। तो एक अर्थ में देखा जाए

तो दोस्त बनाना आसान हो गया था, हालाँकि दूसरी ओर यह अधिक कठिन भी था, क्योंकि एक स्तर पर दोस्ती की परीक्षा इस बात से होती थी कि सामने वाले ने गीता को कैसे स्वीकार किया। यदि वे उसे शामिल करने को तैयार होते तो वे सही थे, यदि नहीं, तो झगड़े होते थे जिनका अन्त कभी-कभी आँसू बहाकर होता था।

बेहद प्रेम

एक विकलांग व्यक्ति की बहन होने के नाते मुझे इस महत्वपूर्ण बात का उल्लेख ज़रूर करना चाहिए कि इस रिश्ते में प्रेम, देखभाल और परिपोषण की एक ऐसी असाधारण भावना होती है जो सिर्फ़ अच्छी होती है तथा इसके सिवा कुछ और हो भी नहीं सकती। आमतौर पर यह सब महसूस करने के लिए लोगों को अपने स्वयं के बच्चों के जन्म का इन्तज़ार करना पड़ता है, लेकिन मुझे लगता है कि हम एक ऐसी विशेष श्रेणी के लोग हैं जो इन चीज़ों का अनुभव पहले ही कर लेते हैं। यह खोए हुए बचपन के उस पहलू से जुड़ा हुआ है, जिसका मैंने पहले उल्लेख किया था, लेकिन इसके बावजूद भी यह लाभकारी है।

माता-पिता क्या कर सकते हैं

घर में विकलांग बच्चे के होने का एक महत्त्वपूर्ण आयाम यह है कि यह हर किसी के जीवन को प्रभावित करता है— माता-पिता, भाई-बहन, दादा-दादी और कुछ हद तक, विस्तारित परिवार के जीवन को भी। माता-पिता के मन में कई प्रकार की भावनाएँ होती हैं जैसे कि उदासी, त्याग और कभी-कभी अस्वीकरण; जबकि भीतर ही भीतर उन्हें यह भी पता होता है कि यह हालत बदलने वाली नहीं है। हालाँकि, दैनिक जीवन तो जीना ही पड़ता है जैसे कि काम पर जाना, घर चलाना, सामाजिक सम्बन्ध रखना, अन्य ज़िम्मेदारियों को निभाने के साथ-साथ दूसरे बच्चों, बड़े या छोटे, के लिए समय निकालना और ऊर्जा बचाए रखना। यह सूची चुनौतियों से भरी है।

लेकिन मुद्दे की बात यह है कि दूसरे बच्चे (या बच्चों) को भी एक नए सामान्य रूप में प्रस्तुत किया जाता है। उनके ग्रेड नीचे गिर सकते हैं (जैसा मेरे साथ हुआ था), उन्हें चिड़चिड़ापन हो सकता है, उनमें नए तरह के व्यवहार नज़र आ सकते हैं। इन्हीं सब मुद्दों पर माता-पिता को मदद मिलनी चाहिए ताकि अन्य भाई-बहनों को उनके साथ कुछ गुणवत्तापूर्ण समय बिताने का अवसर और स्थान मिल सके। यह कहना आसान है, करना मुश्किल, लेकिन अतीत के ज्ञान के आधार पर अब मैं यह देख सकती हूँ कि उस वक़्त क्या अलग हो सकता था।

अन्त में, मैं यह कहना चाहती हूँ कि यदि विकलांग बच्चों के माता-पिता स्वयं बहुत ख़ास बन जाते हैं— दो सामान्य मानव जो अपने चरित्र में एक ऐसा पक्ष विकसित करते हैं, जिसे केवल बहादुरी की संज्ञा दी जा सकती है और उनके भीतर एक ऐसी ताक़त आ जाती है जिसका उन्हें भान तक नहीं होता —तो भाई-बहन भी ख़ास, बहुत ख़ास बन जाते हैं। उनका विशिष्ट स्थान इसलिए है क्योंकि वे सदैव दूसरों के निर्णयों को ठीक प्रकार से जाने बिना उनका बेहिचक समर्थन करते हैं, वे केवल अपने भाई या बहन के पक्ष में खड़े रहते हैं और उनके लिए वे कुछ भी करने को तैयार रहते हैं।

मैंने यह सब कुछ गीता से ही सीखा, जिसकी सौजन्यता और स्नेहिल, उदार स्वभाव बचपन में हुई उथल-पुथल से कहीं बढ़कर था। अपनी शारीरिक और भावनात्मक दोनों प्रकार की ज़बरदस्त चुनौतियों के बावजूद उसने यह सौजन्यता दिखाई। वह किसी भी व्यक्ति को भली-भाँति समझ सकती थी और जान सकती थी कि वे क्या हैं और मुझे उस ज्ञान का लाभ होता था! हम प्रिय बहनें थीं और सबसे अच्छी दोस्त भी।

प्रेमा रघुनाथ लर्निंग कर्व की मुख्य सम्पादक हैं। पहले सीबीएसई और बाद में चेन्नई के एक आईबी स्कूल में कई वर्षों तक पढ़ाने के बाद, अब वे चेन्नई के कुछ स्कूलों की समितियों में शामिल हैं। उनसे prema.raghunath@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।
अनुवाद : नलिनी रावल